अब करीब ही है दिल की बीमारी का इलाज

आधुनिक समाज की रचना और विकास में स्वास्थ्य सेवा की भूमिका महत्वपूर्ण है. सौभाग्य की बात यह है कि देश का स्वास्थ्य सेवा उद्योग आधुनिक जीवनशैली की चुनौतियों का सामना करने के लिए पूरी तरह तैयार है. इसके बेहद गंभीर बीमारियों का मुकाबला सुनिश्चित करने के लिए आधुनिक तरीके, प्रौद्योगिकी और श्रेष्ठ किस्म के समाधान मौजूद हैं. पूर्वी भारत में अब खास तौर पर कुछ अत्याधुनिक सुविधाओं वाले अस्पताल और हेल्थ क्लीनिक मौजूद हैं जहां विश्वस्तरीय मेडिकल और ट्रॉमा केयर सुविधाएं किफायती दरों पर प्रदान की जाती हैं.

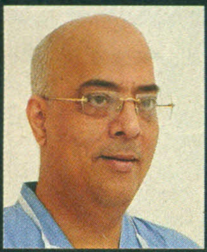

डा. ललित कपूर
निदेशक,
कार्डियो थोरेसिक सर्जरी विभाग
बी.एम बिड़ला हार्ट रिसर्च सेंटर

बी.एम. बिड़ला हार्ट रिसर्च सेंटर

बी.एम. बिड़ला हार्ट रिसर्च सेंटर में कार्डियो थोरेसिक सर्जरी विभाग के निदेशक डॉ. ललित कपूर ने न्यूनतम काट–छांट करते हुए सीने पर महज 6 सेमी का चीरा लगाया और हृदय में रक्त का प्रवाह सुधारने के ऑपरेशन (मिनिमली इनवेजिव कोरोनरी सर्जरी या एमआइसीएस) को सफलतापूर्वक अंजाम दिया है. हृदय में मौजूद चक्रीय रक्त वाहिनी (कोरोनरी आर्टरी) में रुकावट की स्थिति में बायपास सर्जरी की जाती है. कोरोनरी आर्टरी संबंधी बीमारी को लेकर दुनियाभार में अब तक कई शोध हुए हैं और दुनियाभर में ऐसे कई ऑपरेशन हुए हैं लेकिन एमआसीएस दूसरी विधियों से बेहतर और अलग है क्योंकि इसमें सबसे छोटा चीरा लगाने की जरूरत पड़ती है. दूसरी विधियों में एमआइडीसीएबी और पोर्ट एक्सिस सर्जरी शामिल है जिसमें लेफ्ट इंटर्नल मेम्मरी आर्टरी की पूरी तरह चीरफाड़ की जाती है और जोड़ लगाने के लिए सीने से लगे आर्टरियल कॉन्ड्युट का इस्तेमाल किया जाता है. हार्ट लंग मशीन के अपने साइड इफेक्ट्स होते हैं इसलिए इसका इस्तेमाल ज्यादा प्रचलित नहीं हो सका है. इनकी जगह सीएबीजी तकनीक में पंप का इस्तेमाल किया जाता लेकिन आम तौर पर इसमें सीने में चीरा लगाने का सामान्य तरीका उपयोग में लाया जाता है इसलिए इसका चलन अधिक रहा है.

इस तकनीक के अंतर्गत एलआइएमए या लीमा में महज 6 सेमी का लेफ्ट चेस्ट वाल में चीरा लगाया जाता है. जैसे ही कॉन्ड्युट तैयार होता है हृदय को पोषण की आपूर्ति करने वाली मुख्य रक्तवाहिनी (लेफ्ट इंटीरियर डिसेंडिंग आर्टरी) को सीधे जोड़ लगा दिया जाता है. चूंकि सीने में लगने वाला यह चीरा बहुत छोटे आकार का होता है और इसमें में न्यूनतम चीरफाड़ की जाती है इसलिए मरीज बहुत तेजी से स्वस्थ होने लगता है और महज 4 दिन में ही उसे अस्पताल से छुट्टी मिल सकती है. महज दो हफ्ते में मरीज स्वस्थ होकर काम पर लौट सकता है. इसका मतलब यह है कि न केवल मरीज के बचने की उम्मीद बहुत बढ़ जाती है बल्कि उसे दर्द भी बहुत ही कम मात्रा में होता है साथ ही सीने पर चीर–फाड़ के बहुत ज्यादा निशान नहीं रह जाते. झारखंड के एक मरीज ने जब ऐसा ऑपरेशन बी.एम बिड़ला हार्ट रिसर्च सेंटर करवाया था तब वह स्वस्थ होकर मात्र दो सप्ताह में ही अपने काम पर लौट गया. डॉ. कपूर का कहना है कि बी.एम बिड़ला हार्ट रिसर्च सेंटर में एएसडी, सीएबीजी, माइट्रल वॉल्व सर्जरी, एऑर्टिक वाल्व जैसी सर्जरीज मिनिमली इनवेजिव से अक्सर होती रहती हैं.

डा. रतन कुमार दास
क्लिनिकल निदेशक एवॅ
सिनियर कंसलटेन्ट
मेडिका सूपरस्पेशैलिटि हॉससि्पटल

मेडिका सुपरस्पेशल्टी हॉस्पिटल

दिल का वॉल्व बदलने में न्यूनतम दर्द के साथ ऑपरेशन की आधुनिक तकनीक में मेडिका सुपरस्पेशल्टी हॉस्पिटल को महारथ हासिल है. मिनिमली इनवेजिव थोरोस्कोपी असिस्टेड माइट्रल वाल्व रिप्लेसमेंट एक ऐसी चिकत्सकीय प्रक्रिया है जिसका ज्यादातर अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त संस्थान इस्तेमाल करते हैं और अब तक इस बहुत अच्छे परिणाम मिले हैं. इसके दो सबसे बड़े कारण हैंदृ पहला ऑपरेशन के बाद दर्द में कमी और इसका शरीर पर कोई खास निशान नहीं दिखाई देता.

मेडिका सुपरस्पेशल्टी हॉस्पिटल के कार्डिएक सर्जन्स ने बीती 20 जून को उड़ीसा के रहना वाले 18 साल के एक रोगी का ऑपरेशन किया जो रुमेटिक हार्ट डिसीज से पीड़ित था और उसका दिल के वाल्व संबंधी काफी बड़ी परेशानी थी. पूर्वी भारत में किया गया अपनी किस्म का यह पहला ऑपरेशन था. इस ऑपरेशन के दौरान विशेष किस्म के थोरोस्कोपिक उपकरणों का इस्तेमाल करते हुए और फेमोरो–फोमोरल बायपास के जरिए सीने के दाहिनी ओर एक छोटा सा छेद करना होता है. जिस तरह लेप्रोस्कोपिक सर्जरी में छाती में एक छोटा सा निशान रह जाता है वैसा ही एक मामूली निशान इस प्रोसिजर के बाद भी रह जाता है.

ऑपरेशन का यह तरीका पहली बार लोगों के सामने लाने का श्रेय बेल्जियम के डॉ. होगो बर्मन को प्राप्त है. बाद में इसे अमेरिका में डॉ. चिटवुड ने और जर्मनी में लीप्जिग हार्ट सेंटर के डॉ. एफ मोर ने इसे प्रचारित किया. कुछ समय पहले मेडिका ने यह कार्य शुरू किया है. मौजूदा समय में इस प्रोसिजर का इस्तेमाल देश के चुनिंदा अस्पताल ही करते हैं. लेकिन इसे यह देशभर में बड़ी तेजी से मशहूर हो रही है. तकनीक के माध्यम से लगभग सभी किस्म की माइट्रल वाल्व सर्जरी, ट्राइकस्पिड वाल्व सर्जरी, एडल्ट एएसडी क्लोजर और कार्डियक ट्यूमर का ऑपरेशन संभव है.

इलाज की जैसे ही जरूरत पड़ती है एक मरीज को श्रेष्ठ चिकित्सा सुविधाएं वहन करने योग खर्च में मिलना जरूरी हैं. यह भी जरूरी है की ये सुविधाएं मरीज की पहुंच के भीतर हो और इनके लिए मरीज को चिकित्सा सुविधा पाने के लिए यात्रा करके बहुत ज्यादा दूर नहीं जाना पड़े. इसके लिए बेहतर यही है कि लोग अपने आस–पास मौजूद उन्नत किस्म के चिकित्सा केंद्रों के प्रति जागरुक रहें जो वक्त जरूरत गंभीर बीमारियों का इलाज करने में सक्षम हैं.